दैनिक जागरण
मर्यादा व्यक्तित्व का आभूषण होती है

पाकिस्तान का छलावा

इस पर हैरानी नहीं कि ऐसे तथ्य सामने आ रहे हैं कि पाकिस्तान अपने यहां के आतंकी ढांचे को खत्म करने के लिए कुछ भी नहीं कर रहा है। आतंकी ढांचे को खत्म करने की घोषणा कर कुछ न करना पाकिस्तान की पुरानी आदत है। इस तरह की खोखली घोषणाएं कर पाकिस्तानी शासनाध्यक्ष एक अर्से से दुनिया की आंखों में धूल झोंकने का काम कर रहे हैं। इमरान खान भी पुराने शासकों की राह पर चल रहे हैं और इसके पीछे मकसद है अंतरराष्ट्रीय दबाव से मुक्ति पाना ताकि कर्ज लेने में आसानी हो और एफएटीएफ कोई सख्त रवैया न अपनाए। अभी इस संस्था ने पाकिस्तान को ग्रे सूची में डाल रखा है और यह चेतावनी दी है कि अगर उसने अपने यहां के आतंकी ढांचे को खत्म नहीं किया तो उसे काली सूची में डाला जा सकता है। पाकिस्तान इसी से बचना चाह रहा है और इसीलिए इमरान खान की ओर से पहले यह कहा गया कि वह आतंकी संगठनों पर लगाम लगाएंगे और फिर यह कि आतंकी ढांचा हमारे किसी काम का नहीं। इन बयानों पर यकीन न करने के अच्छे-भले कारण हैं। दो-चार आतंकियों की गिरफ्तारी या नजरबंदी के अलावा पाकिस्तान से ऐसी कोई खबर नहीं आई कि बड़े पैमाने पर जिहादियों की धर-पकड़ की जा रही है। अगर ऐसा कुछ किया गया होता तो उसकी कोई न कोई प्रतिक्रिया अवश्य देखने को मिलती। कहीं कोई प्रतिक्रिया इसीलिए नहीं हुई, क्योंकि आतंकियों के खिलाफ कुछ किया ही नहीं गया। पठानकोट और पुलवामा हमले के लिए जिम्मेदार आतंकी संगठन जैश ए मुहम्मद के सरगना मसूद अजहर के बारे में यही सूचनाएं आ रही हैं कि वह पाकिस्तानी सेना की खुफिया एजेंसी आइएसआइ की सुरक्षा में है। ऐसी ही सूचना एक अन्य आतंकी सरगना दाऊद इब्राहिम के बारे में भी है। यह भी किसी से छिपा नहीं कि लश्करे तैयबा के सरगना हाफिज सईद की नजरबंदी वास्तव में उसकी हिफाजत का इंतजाम है।

इन दिनों भारत के राजनीतिक दल इमरान खान के इस बयान की अपने-अपने ढंग से व्याख्या करने में लगे हुए हैं कि अगर नरेंद्र मोदी फिर से प्रधानमंत्री बनते हैं तो भारत से शांतिपूर्ण संबंध कायम होने के आसार हैं। चुनाव के इस मौके पर एक-दूसरे के प्रति हमलावर राजनीतिक दल इमरान खान के इस बयान का मनचाहा मतलब निकालने के लिए स्वतंत्र हैं, लेकिन ऐसे आरोप हास्यास्पद ही हैं कि दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों में कोई समझ-बूझ कायम हो गई है। बेहतर होता कि इस बात को समझा जाता कि इमरान खान के इस बयान का उद्देश्य दुनिया को यह संदेश देने की कोशिश की है कि वह भारत से संबंध सुधारने के इच्छुक हैं। विश्व समुदाय इमरान खान के इस बयान को चाहे जिस रूप में ले, भारत को सतर्क रहना होगा। इतना ही नहीं, उसे पाकिस्तान को बेनकाब करने की अपनी कोशिश भी जारी रखनी चाहिए। इस क्रम में यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि विश्व समुदाय और खासकर एफएटीएफ में असर रखने वाले देश पाकिस्तान के छलावे में न आने पाएं। इसके पूरे आसार हैं कि एफएटीएफ की अगली बैठक में चीन पाकिस्तान के बचाव की कोशिश कर सकता है।

सुप्रीम कोर्ट का नोटिस

पश्चिम बंगाल सरकार को एक और मामले में फिर सुप्रीम कोर्ट का नोटिस मिल गया। असल में यह एयरपोर्ट के भीतर विधाननगर पुलिस के अधिकारियों द्वारा कस्टम अधिकारियों को धमकाने का मामला है। कोलकाता हवाई अड्डे पर मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के भतीजे तृणमूल सांसद अभिषेक बनर्जी की पत्नी के सामान की जांच करने पर कस्टम अधिकारियों के कथित उत्पीड़न की घटना का संज्ञान लेते हुए शुक्रवार को बंगाल सरकार को नोटिस जारी कर जवाब तलब किया गया है। मुख्य न्यायाधीश रंजन गोगोई और न्यायमूर्ति संजीव खन्ना की पीठ ने इस कथित घटना को 'बेहद गंभीर' भी बताया। पीठ ने कहा कि 'किसी व्यक्ति ने किसी चीज की तरफ हमारा ध्यान आकर्षित किया है। यह बहुत-बहुत गंभीर है। हम नहीं जानते कि किसके दावे प्रामाणिक हैं। पश्चिम बंगाल में कुछ गंभीर गड़बड़ियां हैं। सुप्रीम कोर्ट का यह कहना चिंता का विषय है। इससे पहले सारधा कांड में आइपीएस अधिकारी राजीव कुमार से पूछताछ को लेकर सीबीआइ व कोलकाता पुलिस के बीच टकराव तथा मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का धरना सर्वविदित है। बताते चलें कि केंद्र ने 29 मार्च को सुप्रीम कोर्ट को बताया था कि कोलकाता हवाई अड्डे पर कस्टम अधिकारियों को स्थानीय पुलिस ने धमकाया, क्योंकि उन्होंने तृणमूल कांग्रेस सांसद की पत्नी के सामान की जांच की थी। केंद्र ने यह भी आरोप लगाया था कि बंगाल में 'पूरी तरह से अराजकता' की स्थिति है। सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने न्यायालय से कहा था कि 15-16 मार्च की रात करीब 1.10 बजे पर दो महिलाएं अंतरराष्ट्रीय उड़ान से आईं थीं। कस्टम अधिकारियों ने उनके सामान की जांच करना चाहा। उन्होंने कहा था, 'उन्हें उनके सामान की जांच करने की अनुमति देने के लिए कहा गया, लेकिन उन्होंने इसका विरोध किया। पासपोर्ट दिखाने के लिए कहने पर अधिकारियों को अपशब्द कहे।' कस्टम अधिकारियों को गिरफ्तार करने की कोशिश भी की गई। हालांकि, अभिषेक बनर्जी ने घटना को साजिश करार दिया था। यहां सवाल यह भी है कि ऐसी कोई बात नहीं हुई तो फिर मामला सुप्रीम कोर्ट तक कैसे पहुंच गया। सच सामने आना चाहिए।

लेखकों की साख का सवाल

विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

यदि दो सौ लेखक चुनाव के समय मतदाताओं से अपील कर रहे हैं तो शायद यह मानकर कि ऐसा करना उनका दायित्व है, मगर यह दायित्वबोध उनके भीतर 2019 में ही क्यों पैदा हुआ?

बीते दिनों ट्विटर पर मैंने एक ट्वीट पढ़ा जिसमें बताया गया था कि 200 से अधिक लेखकों ने मतदाताओं से अपील की है कि वे नफरत की राजनीति के खिलाफ वोट करें। इस अपील का विवरण भी उसमें संलग्न था। अपील में यह तो नहीं बताया गया कि नफरत की राजनीति करने वाले कौन हैं और किसे वोट देना चाहिए, मगर 'बीते कुछ वर्षों में' जैसे प्रयोग तथा अन्य संकेतों से स्पष्ट है कि यह भाजपा को वोट न देने की अपील है। इस अपील पर उस समय तक 66 रीट्वीट आए थे जिन्हें उत्सुकतापूर्वक पढ़ गया। उसमें एक भी प्रतिक्रिया अपील करने वाले लेखकों की पक्ष में नहीं थी, बल्कि उन लेखकों के विरुद्ध ऐसे अपमानजनक विशेषणों का प्रयोग किया गया था कि कुछ तो यहां लिखे भी नहीं जा सकते। उन्हें-झूठे, दलाल, दोगले, बिकाऊ, बरसाती मेढक, पद्म अवार्ड न पाने से निराश, सेक्युलरवादी जहरीले, मुफ्त पीने के आदी तक कहा गया। प्रसिद्ध लेखकों के लिए ऐसे विशेषणों के कारणों में जाना चाहिए। यदि अपील करने वाले लेखक प्रमुख दलों के इतिहास और वर्तमान का विश्लेषण करते हुए मतदाताओं से विमर्श करते तो यह संवाद का विषय बनता, सस्ती प्रतिक्रियाओं का नहीं। यदि इन लेखकों ने समय-समय पर जनता की समस्याओं पर राय व्यक्त कर उनकी सुध लेने का उदाहरण पेश किया होता तो शायद लोगों की ऐसी प्रतिक्रियाएं न आई होतीं। अतीत में मुद्दे बहुत थे जैसे आपातकाल, कश्मीरी पंडितों की समस्या, सिखों का कत्लेआम, हिंदू-मुस्लिम दंगे, दुष्कर्म, तीन तलाक, भूमि अधिग्रहण, किसानों की आत्महत्याएं, विकास का यूरोपीय मॉडल आदि, लेकिन लेखक इन पर चुप रहे और इसीलिए जनता के बीच अविश्वसनीय हो गए। अब चुनाव के समय यदि वे मतदाताओं से अपील कर रहे हैं तो शायद यह मानकर कि ऐसा करना उनका दायित्व है, मगर यह दायित्वबोध उनके भीतर 2019 में ही क्यों पैदा हुआ?

'लेखक के दायित्व' जैसे विषय पर दुनिया भर में बहुत बहसें हो चुकी हैं। लेखक न केवल एक रचनाकार, बल्कि एक नागरिक भी है। रचना में तो वह अपने दायित्व का निर्वहन करता ही है, आवश्यकता पड़ने पर वह राजनीति या जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी सक्रिय हो सकता है। दुनिया में ऐसे लेखकों के उदाहरण कम नहीं हैं जिन्होंने साहित्य के बाहर सीधा कर्म का रास्ता भी चुना। यदि यह चुनाव निजी हित या आत्मरक्षा में होगा तो सामान्य नागरिक का लेखक से विश्वास उठ जाएगा। लेखक समाज की आंख होता है, उसकी आवाज होता है, उसका चित्रकार होता है। उसे किसी राजनीतिक दल से संबद्ध नहीं होना चाहिए। जनता को विश्वास होना चाहिए कि वह जनता का पक्षधर है, किसी दल का नहीं। लेखकों की अपील पर जो प्रतिक्रियाएं आ रही हैं वे उन लेखकों की ही नहीं, संपूर्ण लेखक जाति के प्रति घृणा व्यक्त करने वाली हैं। इस पर उन लेखकों को आत्मावलोकन और आत्मविश्लेषण करना चाहिए। लेखक पाठकों में लोकप्रिय हो सकता है, प्रचार के सहारे प्रसिद्ध भी हो सकता है, लेकिन एक सीमित समुदाय में। बहुसंख्य जनता उसे नहीं जानती और यदि जाने भी तो किसी को आदर देने की उसकी कसौटियां अलग हैं। उसने राजा, रानी, सेनापति या अहंकारी की तुलना में संतों, भक्तों, ऋषियों, मुनियों को आदर दिया। बुद्ध और गांधी प्रमाण हैं कि भारतीय जन ने 'विचार' को तभी आदरणीय माना जब वह 'आचार' में परिवर्तित हो गया।

अवधेश राजपूत

18 अगस्त, 2011 को जिस समय अन्ना हजारे तिहाड़ जेल से रामलीला मैदान पहुंचे, जोरों की बारिश हो रही थी, लेकिन मैंने अपनी आंखों से देखा कि वहां जमा भीड़ पर बारिश का कोई प्रभाव नहीं था। अन्ना का अनशन बारह दिनों तक चला। पुलिस आंकड़ों के अनुसार डेढ़ से दो लाख लोग प्रतिदिन रामलीला मैदान जाते रहे। शहर, कस्बा, गांव, पुरुष, स्त्री पूरा देश इस अवधि में अन्नामय हो गया। अन्ना के प्रति पूरे देश के समर्पण को देखकर मैं सोच रहा था कि आजादी के बाद से ही हमारी लेखक बिरादरी लगातार लिखती और बोलती रही, लेकिन जनता ने उसे विश्वसनीय क्यों नहीं माना? क्योंकि विचार निर्गुण होते हैं, कर्म में प्रकट होकर ही वे सगुण बनते हैं। जैनेंद्र कुमार के प्रसिद्ध उपन्यास 'त्यागपत्र' के प्रथम संस्करण के मुख पृष्ठ पर एक छोटा से वाक्य छपा है-'ज्ञान जानने में नहीं, वैसा हो जाने में है।' यदि कोई न्यायाधीश कानून का महापंडित हो, मगर न्यायी न हो, तो क्या वह न्याय कर सकता है?

बोहेमियन जीवन जीने वाले या लेखक के लिए विशेष छूट की इच्छा रखने वाले पश्चिमी लेखकों का अनुकरण करते हैं। दुनिया में लेखकों का एक बड़ा वर्ग है जो कला में नैतिकता और विशेष रूप से व्यक्तिगत नैतिकता का निषेध करता है। इस पुराने प्रश्न पर बहुत विमर्श और संवाद भी हुए हैं, मगर सवाल यह है कि लेखक अपने शब्दों के प्रति जिम्मेदार है या नहीं? रचनाकार अपनी जिस रचना से दुनिया को बदल देना चाहता है वही रचना करते हुए वह खुद क्यों नहीं बदल जनता? सृजन अगर एक नैतिक कर्म है तो उसे एक नैतिक जीवन की उपज भी होना चाहिए। 'एक साहित्यिक की डायरी' में मुक्तिबोध लिखते हैं, 'यदि आप लोग केवल काव्य-रस को महत्व देते हैं तो अनजाने में ही एक भयानक भूल कर बैठते हो और वह यह कि एक व्यक्ति साहित्य में जिन मूल्यों की स्थापना करता है, वे मूल्य उसके आचरण की मूल प्रेरणा हों, यह आप अपने लिए अनावश्यक.. इर्रेलेवेंट मानते हैं। इसका बहुत बुरा परिणाम होता है। साहित्य में प्रगतिवादी किंतु जीवन प्रतिक्रिया से घनिष्ठ सहचरत्व की पोषक, साहित्य में मानवतावादी किंतु जीवन में शोषकों की अभिन्न मित्र- इस प्रकार की विद्रुप भयानक आकार वाली विसंगतियां आलोचक न देख पाए, साहित्यक सौजन्यवश चुप रहे, लेकिन साहित्य से प्रेम करने वाली जनता उन्हें अपनी करोड़ों आंखों से देखती है। और चूंकि आलोचक और संपादक तथा साहित्य के अन्य नेता इसे नहीं देख पाते इसलिए वह उन्हें धिक्कारती भी है। (पृ.111,113)

शब्द और उसके प्रयोक्ता के आचार के बीच फासला जितना ही बढ़ता है, भाषा उतनी ही भ्रष्ट होती है। 'शतपथ ब्राह्मण' में कहा गया है कि अनृत में लिप्त मनुष्य के लिए आशा है कि सत्य के द्वारा उसका उद्धार कभी हो जाए, परंतु सत्य के साथ मोलभाव करने वाले के लिए कोई आशा नहीं है। ऋषि ने ठीक ही कहा कि जो अविद्या में फंसा है वह तो अंधकार में है ही, जिसने विद्या के साथ अपना व्यवहार कुटिल बना लिया उसका बंधन और भी कठोर है। महात्मा गांधी लिखते हैं, 'जीवन सब कलाओं से बढ़कर है। मैं तो यहां तक कहूंगा कि जिसने जीवन में प्रायः पूर्णता को प्राप्त कर लिया है, वह सबसे बड़ा कलाकार है। कारण कि उदात्त जीवन के निश्चित आधार और संरचना के बिना कला है भी क्या? हमने किसी तरह यह विश्वास पा लिया है कि कला व्यक्तिगत जीवन की शुचिता से स्वतंत्र है। मैं अपने संपूर्ण अनुभव के बल पर कह सकता हूं कि इससे ज्यादा झूठी बात और कोई नहीं हो सकती। अब जबकि मैं अपने ऐहिक जीवन की अंतिम अवस्था में हूं, मेरा कहना है कि जीवन की शुचिता सबसे ऊंची और सबसे सच्ची कला है।'

(लेखक साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष हैं)

response@jagran.com

एक मतदाता का प्रेम पत्र

हास्य-व्यंग्य

चुनावी महासमर में सभी योद्धा हुंकार भर रहे हैं, लेकिन युद्धभूमि रक्त की नहीं 'मत' की प्यासी है। कुशल सेनापति अग्रिम मोर्चे पर डट चुके हैं। वे दुश्मनों की ओर लगातार फेंक रहे हैं। कुछ गोले गलती से एक जागरूक मतदाता पर भी गिर पड़े। उसने इस बात का तनिक भी बुरा नहीं माना। दरअसल वह किसी भी बात का बुरा नहीं मानता। यहां तक कि उसका पूरा शरीर घोषणा-पत्र और संकल्प-पत्र से बिंध चुका है। चुनाव-रथी इस विनम्र मतदाता का इस तरह खयाल रख रहे हैं कि जैसे ही वह दुखी होना चाहता है, उस पर आश्वासनों की बौछार हो जाती है। उसके चेहरे पर एक अदद हंसी के लिए दुनिया के सारे वादे, संकल्प कुर्बान हैं। खुद पर गिरे गोले में लिखे संदेश को उस जागरूक मतदाता ने पढ़ लिया। उसमें साफ शब्दों में लिखा था, 'एक बार मुस्करा दो, नहीं तो अगले पांच साल तक हंसना भूल जाओगे। यह चेतावनी नहीं विनम्र सलाह है।' मतदाता भी आखिर आदमी ठहरा। वह इस विनम्रता पर ऊपर से नीचे तक पसीज गया। अभी तक हर चुनाव में वह कुछ न कुछ पा ही रहा था। बदले में अपने अन्नदाता को कुछ दिया नहीं। दूसरी तरफ अन्नदाता ने हर बार उसे अपना अंगूठा समर्पित किया। वह बेचारा यह भी न कर सका। इस महासमर में उसे अपनी ओर से आहुति देनी है। उसने कलम उठाई और अपने अन्नदाता को नमन करके लिखना शुरू किया।

मेरे प्रिय अन्नदाता,

आपके 'घोषणा-पत्र' और 'संकल्प-पत्र' से उत्पन्न अनुराग-स्वरूप यह 'प्रेम-पत्र' लिख रहा हूं। उम्मीद है, विगत में किए गए आपके वादों की तरह मेरा पत्र भी आप तक पहुंच सकेगा। एक बात शुरू में ही साफ कर दूं कि आपके अनेक रूपों को हम एक मानकर ही चल रहे हैं। अलग-अलग बंटना जनता का गुण होता है, राजा का नहीं। हम एक को यह पाती लिख रहे हैं, पर यह सभी को संबोधित है। हम सदैव से आपके रहे हैं और रहेंगे। आप चाहे कितने भी रूप धरकर हमसे मिलने आएं, हम अपने आराध्य को जरूर पहचान लेंगे। पहले भी प्रभु अपने भक्त से मिलने के लिए अनेक रूपों में प्रकट होते रहे हैं। यह हमारी धृष्टता होगी कि हम अपना रूप बदल लें। इस पर आपका ही अधिकार है।

संतोष त्रिवेदी

हम यह संकल्प भी करते हैं कि बटन दबाते वक्त भले 'पीं' की आवाज आए, हम आपके रहते कभी 'चीं' नहीं बोलेंगे

सच मानिए, आपके वादों को पढ़ते समय हमारी आंखें भर आईं। भर तो जेब भी जाती, पर वह पहले से ही इतनी लबालब है कि उसमें चने तक रखने की गुंजाइश नहीं है। हमारे हाथ को काम देने का संकल्प आपने लिया है तो बता दूं, अभी वो खाली नहीं हैं। किसी ने यह निरी अफवाह उड़ाई है। हम तो दिन-रात आपकी माला जपते हैं। पहले भजन-पूजन का समय अलग से निकालना पड़ता था। अब सोते-जागते सोशल मीडिया पर हम लगे रहते हैं। इतने अच्छे समय में भी कुछ लोग सवाल उठा रहे हैं। वे अज्ञानी हैं। हमें आपकी निष्ठा पर कभी संदेह नहीं रहा। हम सवाल उठाने वाले को ही संदिग्ध बना देते हैं। आप इससे चिंतामुक्त रहें। अपने वादे हमारे पास बिना संकोच भेजते रहें। हम इन्हें पवित्र वचन मानकर उदरस्थ कर लेंगे।

कई बातें सोचकर मन गदगद हो रहा है, पर क्या करें, चुनाव आयोग द्वारा युद्ध-समाप्ति का शंख बजाने से पहले हम आपका पूजन भी नहीं कर सकते। बहरहाल, आपकी यह योजना काबिले-तारीफ है। कम से कम इससे हम भी खबर तो बन सके।

हे सर्वशक्तिमान, हमारे आसपास बड़ा शोर है पर चिंता न करिए। अपनी आंखों की तरह कान भी हमने आपको समर्पित कर दिए हैं। जब भी मन उदास होता है, आपकी 'मूरत' देख लेता हूं, जिसे आपने 'जनता की इच्छा' के लिए तपती धूप में खड़ा कर दिया है। जब भी मेहनत-मजदूरी करके थक जाता हूं, आपकी 'तपती मूर्ति' देखकर राहत मिलती है। जब आपको अपने परिवार के सत्ता-सुख के लिए संघर्ष करते देखता हूं, सच जानिए, आंखें छलछला उठती हैं। इससे खुद के परिवार को दो जून की रोटी खिला पाने का हौसला मिलता है। जब आप हमें इतना सब खिला रहे हैं तो हम भी कुछ 'गुल' क्यों नहीं खिलाएंगे? हे पालनहार, आपने हमारे सुख के लिए अपने दिन का चैन और रातों की नींद हराम की, इसकी भरपाई हम नहीं कर सकते। आज हम वादा करते हैं कि मत देने के समय हमारी आंखों के सामने आपका ही चेहरा होगा। हम यह संकल्प भी करते हैं कि बटन दबाते वक्त भले 'पीं' की आवाज आए, हम आपके रहते कभी 'चीं' नहीं बोलेंगे।

मतदाता अभी यह पत्र लिख ही रहा था, तभी सन्न से उसके ऊपर वादों की मिसाइल टूट पड़ी। वह अचेत हो गया।

response@jagran.com

तथ्य-कथ्य | लोकसभा चुनावों पर खर्च (करोड़ रुपये में)

स्रोत: विधि एवं न्याय मंत्रालय और भारत निर्वाचन आयोग

ऊर्जा

मनुष्यता

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। इसलिए उसे अपना और अपने समाज का अस्तित्व बनाए रखने के लिए एक-दूसरे के सुख-दुख में भागीदार बनना पड़ता है। यानी प्रत्येक मनुष्य को अपने परिवार के साथ ही संपूर्ण समाज के उत्थान के लिए प्रयासरत रहना चाहिए। हालांकि, वर्तमान में एकीकृत परिवारों के बढ़ते चलन और जीवनशैली में आमूलचूल बदलाव आने के कारण ज्यादातर लोगों ने अपना सामाजिक दायरा समेट लिया है। इस वजह से दिनों-दिन मनुष्यता लुप्त होती जा रही है, जो स्वयं मनुष्य जाति के लिए भी खतरे की निशानी है। हमारे पूर्वजों ने विश्व को एक आदर्श गांव में बदलने की परिकल्पना की थी, लेकिन आज हम ठीक उसके विपरीत दिशा की ओर जा रहे हैं।

सच्चाई यह है कि मनुष्य अकेला जीवन व्यतीत नहीं कर सकता, उसे हर हाल में समाज की जरूरत होती है। इसलिए जीवन-पथ पर उसे लोगों के सहयोग लेने और देने की आवश्यकता पड़ती है। एक-दूसरे के सहयोग से ही मनुष्य उन्नति करता है। सिर्फ स्वार्थी प्रवृत्ति के लोग केवल अपने हित की चिंता करते हैं और उनके हृदय में समाज के उत्थान की भावना उत्पन्न नहीं होती। कोई समाज तभी खुशहाल रह सकता है, जब उसका प्रत्येक व्यक्ति सुखी-संपन्न और निरोगी हो। किसी भी समाज में यदि कुछ लोग सुविधा-संपन्न हों और अन्य दुखमयी जीवन व्यतीत कर रहे हों, तो ऐसा समाज कभी उन्नति नहीं कर सकता। समाज की प्रगति में समानता का विशेष महत्व है और यह तभी संभव है, जब लोग आपस में मनुष्यता रखें।

यदि हमारा जन्म हुआ है, तो मृत्यु भी अवश्य होगी। ऐसे में, हमें मृत्यु से नहीं डरना चाहिए, बल्कि अपने जीवन में ऐसे कार्य करने चाहिए, जिससे हमें मृत्यु के बाद भी याद रखा जाए। ऐसा तभी संभव है, जब हम मनुष्यता को अपनाएंगे और अपना जीवन दूसरों को समर्पित कर देंगे। दधीचि, कर्ण आदि व्यक्तियों का उदाहरण त्याग और बलिदान का संदेश देता है कि किस प्रकार इन्होंने अपनी जान की परवाह तक न करके लोकहित के लिए कार्य किए। मनुष्यता बनाए रखने के लिए बड़ी आहुति की जरूरत नहीं होती, बल्कि हमारी जितनी सामर्थ्य और क्षमता है, उसी अनुरूप लोगों की सहायता कर सकते हैं।

आचार्य अनिल वत्स

ब्लैक होल तस्वीर की भारतीय कड़ी

मुकुल व्यास

वैज्ञानिकों की इस अहम सफलता में प्रख्यात भारतीय वैज्ञानिक जगदीश चंद्र बोस का भी योगदान है

खगोल वैज्ञानिकों की अंतरराष्ट्रीय टीम ने ब्लैक होल की मौजूदगी का पहला प्रत्यक्ष दृश्य पेश किया है। यह ब्लैक होल पृथ्वी से करीब 5.5 करोड़ प्रकाश वर्ष दूर मेसियर 87 नामक आकाशगंगा के बीच में है। अभी तक हम ब्लैक होल की जो तस्वीरें देख रहे थे वे सिर्फ काल्पनिक थीं। आपको यह जानकार आश्चर्य होगा कि वैज्ञानिकों की इस महत्वपूर्ण सफलता में प्रख्यात भारतीय वैज्ञानिक जगदीश चंद्र बोस का भी योगदान है। खगोल वैज्ञानिकों ने ब्लैक होल का प्रमाण जुटाने के लिए आठ रेडियो टेलीस्कोप के विश्वव्यापी नेटवर्क का सहारा लिया। यह नेटवर्क अंटार्कटिका से लेकर स्पेन और चिली तक विभिन्न स्थानों तक फैला हुआ है। ये टेलीस्कोप एक दूसरे के साथ लयबद्ध होकर इवेंट होराइजन टेलीस्कोप (इएचटी) के रूप में काम करते हैं। ये टेलीस्कोप जिन फ्रीक्वेंसी पर काम करते हैं उन्हें सर्वप्रथम जगदीश चंद्र बोस ने कलकत्ता में करीब 120 वर्ष पहले उत्पन्न किया था। भारत ईएचटी नेटवर्क का हिस्सा नहीं है, लेकिन रेडियो टेलीस्कोप ने जिन सैकड़ों गीगाहर्ट्ज की फ्रीक्वेंसी पर काम किया उन्हें सबसे पहले बोस ने कलकत्ता में 1985 में किए गए प्रयोगों के दौरान उत्पन्न किया था। पुणे स्थित इंटर-यूनिवर्सिटी सेंटर फॉर एस्ट्रोनॉमी एंड एस्ट्रोफिजिक्स के निदेशक सोमक रायचौधरी ने कहा कि ईएचटी नेटवर्क के टेलीस्कोप तकनीकी दृष्टि से बहुत उन्नत अवश्य हैं, लेकिन वे उसी मूल टेक्नोलॉजी का प्रयोग कर रहे हैं जिन्हें जगदीश चंद्र बोस ने प्रदर्शित किया था। अमेरिका स्थित हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में ईएचटी प्रोजेक्ट के निदेशक शेफर्ड डेल्मान ने कहा कि हम मानवता के सम्मुख पहली बार किसी ब्लैक होल की तस्वीर प्रस्तुत कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि ब्लैक होल ब्रह्मांड के सबसे रहस्यपूर्ण ऑब्जेक्ट्स हैं।

वैज्ञानिकों के पर्यवेक्षणों में एक छल्ले जैसा आकार नजर आया जिसके मध्य में काला हिस्सा था जो कि मेसियर 87 ब्लैक होल की छाया थी। इसे 'सुपरमैसिव' ब्लैक होल कहा जाता है, क्योंकि इसका द्रव्यमान सूरज के द्रव्यमान से 6.5 अरब गुणा अधिक है। ब्लैकहोल ब्रह्मांड के विशाल द्रव्यमान वाले रहस्यपूर्ण ऑब्जेक्ट हैं जहां गुरुत्वाकर्षण इतना प्रबल होता है कि वहां से कुछ भी बाहर नहीं जा सकता। इसी से ये अदृश्य होते हैं। ये ब्लैक होल जब अपने आसपास के पदार्थ को निगलते हैं तो उनका आकार बढ़ जाता है। ब्लैक होल का निर्माण उस समय होता है जब एक बड़े तारे की 'मृत्यु' हो जाती है। सुपरमैसिव ब्लैक होल प्रत्येक आकाशगंगा में मौजूद है।

वैज्ञानिक ब्लैक होल का फोटो खींचने में नाकाम रहे थे। वे अभी तक परोक्ष प्रमाणों पर निर्भर थे जो आसपास के ऑब्जेक्ट्स से मिल रहे संकेतों या उनके आचरण के रूप में मिल रहे थे। उदाहरण के तौर पर एक ब्लैक होल अपने पास फटकने वाले तारे को हजम कर जाता है। इस प्रक्रिया में तारा गर्म हो कर एक्स-रे संकेत उत्पन्न करते हैं। ये संकेत टेलीस्कोप द्वारा ग्रहण कर लिए जाते हैं। कभी-कभी ब्लैक होल चार्ज्ड कणों की बौछारें छोड़ते हैं जिन्हें हमारे उपकरण डिटेक्ट कर सकते हैं। यदि ये ऑब्जेक्ट्स अजीब ढंग से खिंचते हुए दिखते हैं तो इसका कारण कोई ब्लैक होल भी हो सकता है।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

बगलें झांकते अफसर

देश के लोकतंत्र को मजबूत बनाए रखने की जिम्मेदारी उठाने वाला चुनाव आयोग इन दिनों पत्रकारों के तल्ख तेवर और तीखे सवालों से बेहद परेशान है। चुनाव के इस मौसम में आयोग की बुलाई जाने वाली साप्ताहिक प्रेस वार्ताओं में इसका जीता-जागता नमूना देखने को मिला। सरकार और विपक्ष के नेताओं के बयानों और उससे होते चुनाव आचार संहिता के उल्लंघन के सवालों पर आयोग के अफसर बगलें झांकते नजर आए। मंच पर बैठे अफसरों के हावभाव कुछ ऐसे रहे मानों वे कहां फंस गए। यहां तक कि कई तीखे सवालों पर तो अफसरों ने सिर्फ मुस्कान से ही जवाब देना बेहतर समझा। अब इसे आयोग की कोई मजबूरी कहिए या मजबूत कानूनी शिकंजे की कमजोरी कि आयोग के बाबू लोग चुप रहने में ही ज्यादा खुश हैं।

राजरंग

एक तीर से कई निशाने

राजस्थान के सियासी दंगल में इन दिनों केंद्र के पढ़ाई-लिखाई वाले मंत्री जी के चुनावी कौशल की चर्चा काफी गर्म है। जहां अब तक पार्टी की राज्य इकाई का एक पत्ता भी बगैर उस शख्स की सहमति के नहीं हिलता था, वहां पार्टी की नई जिम्मेदारी मिलने के बाद मंत्री जी ने जिस तरीके से कई ऐसे चेहरों को पार्टी के साथ लाने का काम किया है, जिनकी राजस्थान के सियासी दंगल में काफी अहमियत है। इनमें जाट नेता हनुमान बेनीवाल और गुर्जर नेता किरोड़ी सिंह बैंसला जैसे बड़े नाम शामिल हैं। आम चुनावों में सामाजिक समीकरणों को साधने के लिहाज से पार्टी उन्हें काफी अहम मानती है। माना जा रहा है कि मंत्री जी ने एक तीर से कई निशाने साधे हैं। एक तो इन नेताओं को साथ लाकर पार्टी को मजबूती दी है, वहीं प्रदेश में एक शख्स के उस एकाधिकार को भी खत्म किया है, जिसमें सभी फैसले एक जगह से ही होते थे। इसके साथ ही पार्टी के मंच पर भी अपने कौशल का परिचय देकर यह जता दिया है कि वह किसी से कम नहीं हैं। और बड़ी जिम्मेदारी भी संभाल सकते है।

मजबूरी में खानापूरी

चुनावी मौसम है तो मर्यादाओं की धज्जियां खूब उड़ाई उड़ाई जा रही हैं। पार्टियां और उनके नेता के लिए वर्जनाएं तो ठेंगे पर हैं। राजनीतिक दलों या नेताओं की ओर से चुनाव में ऐसा करना नई बात नहीं। मगर जब सरकारी तंत्र से जुड़ी निष्पक्ष कही जाने वाली संस्थाएं भी इस रंग में रंग जाएं तो फिर गंभीर सवाल उठेंगे ही। चुनाव आयोग की कड़ी फटकार और नसीहत के बाद कुछ ऐसा ही हाल दूरदर्शन और आकाशवाणी के अंदरूनी गलियारे में है। सरकार-सत्तापक्ष की आंखों का नूर बनने के चक्कर में इन दोनों प्रतिष्ठित संस्थाओं के निष्पक्ष नहीं होने के चुनाव आयोग की टिप्पणी को लेकर इनके अधिकारियों का एक बड़ा वर्ग बेहद असहज है। उनका कहना है कि चुनाव के दौरान निष्पक्षता की न्यूनतम मर्यादा नहीं बनाए रखने की वजह से प्रसार भारती की ऐसी फजीहत हुई है। इन तीखे सवालों के बाद सरकार की ढपली बजाने में आगे रहने वाले ऐसे अधिकारी विपक्षी नेताओं को कवरेज देने में भले अब भी कंजूसी करें, मगर उन्हें मौका देने की खानापूरी फिलहाल उनकी मजबूरी बन गई है।

आचार संहिता का डर

लुटियंस जोन में बैठने वाले एक पदाधिकारी अक्सर अपने बयानों को लेकर चर्चा में रहते हैं। कई बार तो ऐसा लगता है कि उन्हें शायद विवादित बयान देना पसंद है, लेकिन हाल में जब उन्होंने जोश में आकर एक राजनीतिक बयान दे डाला तो वह फंस गए। उन्हें चुनाव आयोग ने नोटिस भेज दिया जिसका जवाब देने के लिए उन्हें कड़ी मशक्कत करनी पड़ी। वह अपने दफ्तर से लेकर पीएमओ तक सबको समझाते रहे कि उनके बयान में ऐसा कुछ नहीं था और उन्होंने अपने जवाब में पूरी तरह सफाई दे दी है। इस घटनाक्रम का असर कुछ ऐसा हुआ कि महोदय आजकल मीडिया से दूर रहने लगे हैं। चुनाव आचार संहिता का डर उन्हें इस कदर लगा है कि उन्होंने मीडिया के साथ सभी साक्षात्कार कैंसल कर दिए हैं।

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 23359961-62, नोएडा कार्यालय : 0120-3915800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 * इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त।